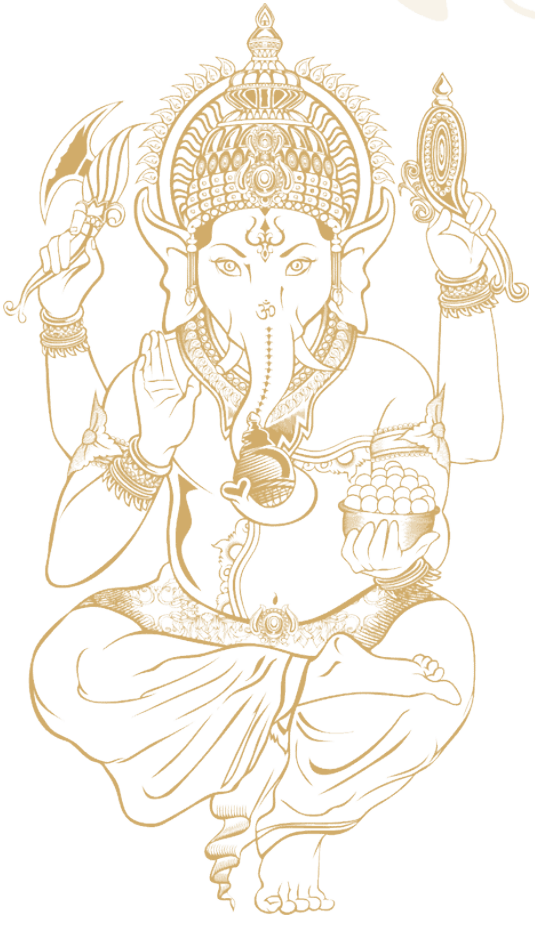

Mr. Eshita Parasher

22 Aug 2019

06:25 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120308201**

तिथि 22/08/2019 **समय** 18:25:14 **वार** गुरुवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:07:37
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	16:38:57 घं
वेलान्तर	00:03:02 घं
सूर्योदय	05:23:57 घं
सूर्यास्त	18:18:26 घं
चैत्रादि संवत	2076
शक संवत	1941
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	7
नक्षत्र	भरणी
योग	ध्रुव
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ले-लेखा
पाया(रा.-न.)	ताम्र-स्वर्ण
होरा	शनि
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

शुक्र 6वर्ष 4मा 18दि

शुक्र

22/08/2019
09/01/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	22/08/2019
शनि	09/01/2022
बुध	09/11/2024
केतु	09/01/2026

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 7मा 4दि

उल्का

27/03/2021
28/03/2027

उल्का	27/03/2022
सिद्धा	28/05/2023
संकटा	26/09/2024
मंगला	25/11/2024
पिंगला	27/03/2025
धान्या	26/09/2025
भ्रामरी	27/05/2026
भद्रिका	28/03/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:23:08	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	---	0:00			
सूर्य			05:01:32	सिंह	मघा	2	केतु	मंगल	मूलत्रिकोण	1.65	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			22:24:41	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	सम राशि	1.23	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:37:00	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.22	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			22:36:32	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	शत्रु राशि	0.83	आत्मा	ज्ञाति	मित्र
गुरु			20:33:45	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	मित्र राशि	1.14	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र		अ	07:18:28	सिंह	मघा	3	केतु	राहु	शत्रु राशि	1.10	ज्ञाति	कलत्र	अतिमित्र
शनि	व		20:21:05	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	गुरु	सम राशि	1.30	मातृ	आयु	जन्म
राहु	व		22:33:09	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	उच्च राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		22:33:09	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	उच्च राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

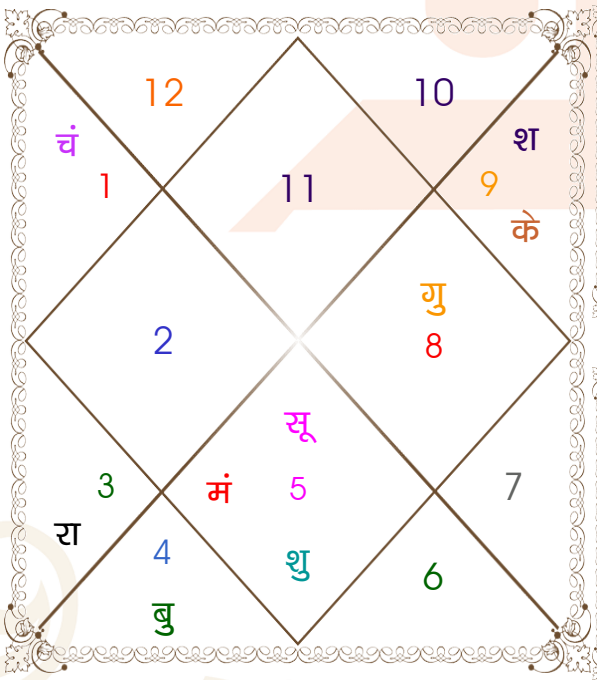

चन्द्र कुंडली

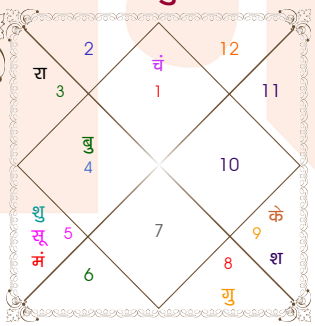

नवमांश कुंडली

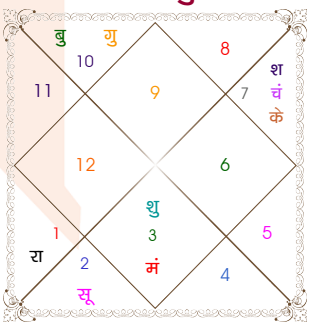

सर्वाष्टकवर्ग

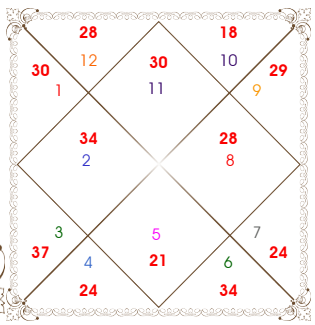

दशमांश कुंडली

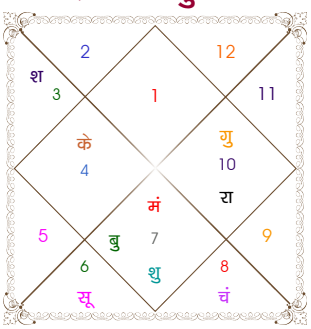

नक्षत्रफल

आप भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल हैं। आपकी योनि गज, वर्ण क्षत्रिय, नाडी मध्य, गण मनुष्य तथा वर्ग मृग हैं। भरणी नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्म लेने के कारण आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "ले" होगा।

इस नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका मनोरंजन संबंधी यथा गीत, संगीत, सिनेमा, नृत्य आदि तथा खेलों के प्रति विशेष आकर्षण रहेगा तथा इन्हीं पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। जल से आप भयभीत रहेंगी यहां तक कि यदा कदा स्नान की इच्छा का भी अभाव रहेगा। प्रकृति आपकी चंचल होगी तथा अन्य जनों से आपका समान्य व्यवहार रहेगा।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने मन में दृढ़ संकल्प को रखने वाली होंगी अर्थात् जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगी उसे दृढ़ता के साथ पूर्ण करेंगी। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगी। शरीर आपका स्वस्थ, तथा सुन्दर रहेगा तथा बीमारियां अल्प मात्रा में ही होंगी। कार्यशैली आपकी चतुराई पूर्ण ढंग की होगी जो भी कार्य करेंगी चतुराई से उसे पूर्ण भी करेंगी। सामान्यतया जीवन आपका सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारूग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आपकी दृढ़ता जिद्द या हठ में परिवर्तित हो जायेगी। जिससे आपसे तथा अन्य जनों को परेशानी होगी। सम्पत्ति, धन दौलत तथा ऐश्वर्य से आप हमेशा युक्त रहेगी। इनका किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहेगा। धनार्जन उत्तम रूप में होगा तथा शारीरिक स्वस्थता भी बनी रहेगी तथा मुखाकृति आपकी सुन्दर एवं मनमोहक होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

समय समय पर आपको मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति होगी तथा समाज की दृष्टि में यदा कदा आपका चरित्र सन्देह जनक रहेगा। धनवती होकर आप अपना जीवन यापन करेंगी।

याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करना पसन्द करेंगी तथा परिवार में आप अन्य भाई-बहनों में श्रेष्ठ होंगी।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण तथा आँखें लालिमा लिए हाथ तथा पैर कमल की कान्ति के समान होंगे। जल से नैसर्गिक भय आपके मन में रहेगा। जीवन की प्रत्येक समस्याओं का आप साहसपूर्वक मुकाबला करेंगी। समाज में आपको यथोचित आदर तथा सम्मान मिलेगा तथा धन को आप सम्मान से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगी जिससे यदा कदा समस्याएं उत्पन्न होंगी। सहयोगियों तथा मित्रों का आपको अधिक संख्या में सान्निध्य प्राप्त होगा। साथ ही पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक रहेगी। पुरूष जाति पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। सर्वसामान्य के प्रति आपका स्नेहयुक्त व्यवहार रहेगा तथा अपने सद्व्यवहार तथा विनयशीलता के कारण मान सम्मान एवं यश की प्राप्ति करेंगी।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप स्वभाव से ही शीघ्र क्रोध करने वाली तथा शीघ्र प्रसन्न होने वाली प्रकृति की होंगी। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय होगी। आपकी हथेली में शौर्यसूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। सबके साथ सहयोग करना आप अपना प्रमुख कर्तव्य समझेंगी। साथ ही अपनी विषम परिस्थितियों में भी दूसरों की सहायता करेंगी।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करना आपके श्रेष्ठ संबंधियों की असंतुष्टि का कारण बनेगा परिणामस्वरूप या तो आप उनसे या वे आपसे अलग हो सकते हैं। चूंकि घर के सारे कार्य आपकी सहमति से ही पूर्ण होंगे। अतः इससे भी सम्बंधियों के साथ आपसी वैमनस्य बढ़ेगा। धन का आप आजीवन उपभोग करेंगी तथा अपने वैभव से समाज में कीर्ति प्राप्त करेंगी।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत्।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण करने या सैर करने के लिए आप ऐसे स्थानों पर जाने की इच्छा करेंगी जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सके। सामाजिक संबंधों की विस्तृता के कारण आप समय समय पर अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा इत्यादि का सेवन भी कर सकती हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपका स्वभाव कभी कभी उग्र हो जाएगा। इस उग्रता से कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। नैसर्गिक रूप से प्रवृति भी आपकी चंचल रहेंगी तथा अवसरानुकूल आप मिथ्याभाषण भी करेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरुर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी। पित्त कारक या ऐसे पदार्थों का भक्षण न करें जिससे शरीर या मस्तिष्क पर गरमी पहुंचती हो नहीं तो मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो सकता है। साथ ही शरीर की सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म से ही धार्मिक प्रवृति होगी। देवता तथा ब्राहमणों की आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगी। आप धन से परिपूर्ण होंगी परन्तु साथ में अभिमान भी रहेगा। दया का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। दीन दुःखियों की आप प्रयत्न से सेवा तथा मदद करेंगी। आप कई प्रकार की कलाओं की जानने वाली होंगी। शारीरिक बल का आपके अन्दर अभाव नहीं रहेगा। ज्ञान प्राप्त करने में भी आपकी विशिष्ट रूचि रहेगी। आपका शरीर सुन्दर कान्ति से सुशोभित रहेगा तथा बहुत से लोगों को आप सुख प्रदान करेंगी।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप हमेशा मान सम्मान से परिपूर्ण रहेंगी तथा आजीवन विपुल धन की स्वामिनी बनी रहेंगी। आखें आपकी बडी होंगी तथा निशाने बाजी में सिद्धहस्त होंगी। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाली होंगी। आप किसी नगर या समूह की प्रतिष्ठित महिला भी हो सकती हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गजयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप राजा की प्रिय होंगी अर्थात् बडे बडे अधिकारियों तथा मंत्रियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे तथा वे सब आपको आदर प्रदान करने वाले होंगे। आप आत्म, बाहु तथा बुद्धिबल से युक्त होकर अपने कार्य को सम्पन्न करेंगी। समस्त सांसारिक तथा भौतिक सुखों का आप उपभोग करेंगी। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी

की सहयोगी या स्वयं उच्चाधिकारी हो सकती हैं। प्रारम्भ से ही आप उत्साही रहेंगी तथा इसी प्रवृति से आप जीवन में खूब उन्नति करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते

रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनो की, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, रविवार प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा आपके लिए अशुभ फलदायी हैं। अतः आप 15 अक्टूबर से लेकर 14 नवम्बर के मध्य कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन साझेदारी आदि न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि पर चन्द्रमा के स्थित रहने पर भी कोई शुभ कार्य प्रारम्भ न करें। ऐसे समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

जब समय आपको प्रतिकूल प्रतीत हो रहा हो मानसिक तथा शारीरिक कष्ट हो रहे हों। व्यापार में हानि, नौकरी या उन्नति में व्यवधान हो रहा हो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, तांबा, गेंहू, गुङ, लाल वस्त्र इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। तथा मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता आएगी। साथ ही मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।